

**Code No.: MR-50**

Total No. of Questions : 8

Total No. of Printed Pages : 1

**स्नातकपरीक्षा:- २०१५**

**बि.ए. - विद्वन्मध्यमा - तृतीयवर्षः**

**शास्त्रम् - जैनसिद्धांतशास्त्रम्**

**भागः - II, पत्रिका - IV**

**विषयः - पुरुषार्थसिद्धयुपायः**

**दिनाङ्कः - 4-4-2015**

**गरिष्ठाङ्काः - १००**

**समयः - 10.00 A.M. to 1.00 P.M.**

**Max. Marks - 100**

- 
- |   |    |
|---|----|
| I. रात्रिभोजने भावद्रव्य हिंसायां महत्त्वं विवृणुत ।  | 15 |
| II. सम्यक् ज्ञानस्य अष्टाङ्गानां वैशिष्ट्यं विचारयत ।   | 15 |
| III. संसारस्य मूल कारणं ग्रन्थोक्तदिशा विशदयत ।   | 10 |
| IV. सत्यव्रतस्य भेदान् विलिख्य विवृणुत ।  | 10 |
| V. श्रावकधर्मान् ग्रन्थानुसारेण विचारयत ।   | 10 |
| VI. निश्चयव्यवहारस्य स्वरूपं लिखत ।   | 10 |
| VII. मुनैः अलौकिकवृत्तिं विवृणुत ।  | 10 |
| VIII. इमौ श्लोकौ व्याख्यात ।  | 20 |
| १. यदपि किल भवति मांसं स्वयमेव मृतस्य महिषवृषभादेः ।<br>तत्रापि भवति हिंसा तदाश्रित निगोतनिर्मथनात् ॥ |    |
| २. चारित्रं भवति यतः समस्त सावध्य योगपरिहरणात् ।<br>सकल कषाय विमुक्तं विशदमूदासिनमात्मरूपं तत् ॥      |    |